



P-ISSN: 2706-7483
E-ISSN: 2706-7491
NAAS Rating: 4.5
IJGGE 2025; 7(7): 13-15
www.geojournal.net
Received: 15-04-2025
Accepted: 19-05-2025

सुनीता कुमारी
शोध छात्रा, जय प्रकाश
विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार, भारत

अनुपम कुमार सिंह
सहायक प्राध्यापक, जय प्रकाश
विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार, भारत

पर्यटन तथा आजीविका विविधीकरण: नालंदा नगर पंचायत के संदर्भ में

सुनीता कुमारी, अनुपम कुमार सिंह

DOI: <https://www.doi.org/10.22271/27067483.2025.v7.i7a.379>

सारांश

पर्यटन शब्द का सामान्य अर्थ है एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना अर्थात् पर्यटकों की घूमने फिरने की क्रिया। अध्ययन क्षेत्र नालंदा नगर पंचायत एक विश्वस्तरीय पर्यटन केन्द्र का समागम स्थल है, अतः पर्यटन ने इस क्षेत्र को आजीविका के साधनों में भिन्नता लाने के कई अवसर दिए हैं। आजीविका विविधीकरण का तात्पर्य है "आजीविका के साधनों में भिन्नता लाना"। इसके द्वारा व्यक्ति की आर्थिक स्थिति विपरित समय में भी स्थिर रह सकती है तथा सामान्य रूप से जीवनयापन कर सकता है। पर्यटन के माध्यम से आजीविका के अन्य साधन उभर कर सामने आते हैं तथा कृषि पर आजीविका हेतु पूर्ण निर्भरता और कृषि पर पड़ रहा अतिरिक्त दबाव भी कम होता है। अध्ययन क्षेत्र एक कृषि प्रधान क्षेत्र है जहाँ गत वर्षों से वर्तमान तक चल रहे पर्यटन के विकास ने आजीविका विविधीकरण के माध्यम से स्थानीय निवासियों की कृषि पर निर्भरता को कम किया है। यह शोध-पत्र अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन के कारण आजीविका विविधीकरण के अन्य साधनों में संभावनाओं की चर्चा करता है तथा यह भी बताने का प्रयास करता है कि पर्यटन क्षेत्र के विकास के द्वारा कृषि पर निर्भरता को और भी कम किया जा सकता है। बिहार सरकार ने इस संदर्भ में अनोखी पहल की है जिसके द्वारा पर्यटन क्षेत्र में आजीविका विविधीकरण को बढ़ावा मिलेगा तथा कृषि पर निर्भरता कम होगी। बिहार कैबिनेट की यह पहल है "मुख्यमंत्री होमस्टे बेड एंड ब्रेकफास्ट प्रोत्साहन योजना 2024" जिसे अगस्त 2024 में मंजूरी दी गई है इसके द्वारा बिहार राज्य में आने वाले सभी पर्यटन स्थल जिसमें नालंदा नगर पंचायत भी शामिल है। पर्यटन के विकास से आजीविका के साधन भी बढ़ेंगे जिससे रोजगार में वृद्धि के साथ-साथ ग्रामीण पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा। इस योजना की सहायता से पर्यटन केन्द्र के आसपास स्थित निवास स्थल भी होंगे जिससे होने वाली आय से यहाँ के लोगों के जीवन स्तर में भी सुधार होगा। शोध-पत्र लेखन में प्राथमिक व द्वितीयक आँकड़ों का प्रयोग किया गया है जिसको शोधकर्ता द्वारा अध्ययन क्षेत्र के भ्रमण से प्राप्त किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण द्वारा यह बताने का प्रयास किया गया है कि आजीविका विविधीकरण के अन्य साधनों में कितनी जनसंख्या संलग्न है। शोध-पत्र के अंत में निवासियों को आजीविका विविधीकरण को व्यवहार में लाने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु इसके लाभ पर चर्चा की गई है। साथ ही पर्यटन विकास की राह में आने वाली समस्या को भी बताया गया है।

कूटशब्द: पर्यटन, आजीविका विविधीकरण, कृषि, रोजगार

1. प्रस्तावना

पर्यटन घूमने-फिरने की मानवीय प्रवृत्ति है जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर मानवीय स्थानांतरण का द्योतक है। आजीविका का अर्थ है जीवन यापन हेतु किया जाने वाला कार्य तथा विविधीकरण इसके विभिन्न प्रकारों या विविधता को बताता है। चूँकि अध्ययन क्षेत्र में विश्वविख्यात पर्यटन केन्द्र तथा यूनेस्को के विश्वधरोहर तथा महत्वपूर्ण स्थान है अतः यहाँ आजीविका विविधीकरण के कुछ अच्छे उदाहरण देखे जा सकते हैं जो स्थानीय लोगों की कृषि पर निर्भरता को कम करते हैं। पर्यटन के विकास के द्वारा नालंदा नगर पंचायत में आजीविका विविधीकरण के प्रमुख साधन होटल, रेस्तरां व्यवसाय, प्रसाधन सामग्री की दुकान, पत्थर की मूर्ति व्यवसाय, गाईड तथा टूर ऑपरेटर, स्थानीय उत्पादों का विक्रय, पर्यटन से जुड़ी सेवाएं प्रमुख हैं। पर्यटन से उत्पन्न आजीविका विविधीकरण साधनों से आर्थिक स्थिति अच्छी बनी रहती है तथा जोखिम में कमी होती है, साथ ही रोजगार सृजन में भी मदद मिलती है। परिणामस्वरूप क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में सुधार होता है। इसके द्वारा स्थानीय संस्कृति का भी प्रचार-प्रसार होता है साथ ही प्राकृतिक सौंदर्य का भी संरक्षण होता है।

Corresponding Author:
सुनीता कुमारी
शोध छात्रा, जय प्रकाश
विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार, भारत

2. आँकड़ा संग्रहण एवं विधितंत्र

शोध में प्राथमिक व द्वितीयक आँकड़ों का प्रयोग किया गया है। द्वितीयक आँकड़ों हेतु प्रकाशित शोध पत्र, रिपोर्ट आदि को शामिल किया गया है। प्राथमिक आँकड़ों का संग्रहण प्रश्नावली तथा अनुसूची के द्वारा किया गया है। प्राप्त आँकड़ों को विश्लेषणात्मक विधि द्वारा विश्लेषण करके क्षेत्र में आजीविका विविधीकरण के वास्तविक स्थिति को बताने का प्रयास किया गया है। अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन विकास से उत्पन्न विविध व्यवसायों में संलग्न मालिकों से प्राथमिक आँकड़े जमा किए गए हैं। शोध पत्र हेतु प्रतिचयन की संख्या संख्या 100 है जिनके विश्लेषण से आजीविका विविधीकरण को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

3. नालंदा नगर पंचायत में पर्यटन

शोध क्षेत्र नालंदा नगर पंचायत केवल एक भौगोलिक क्षेत्र ही नहीं है बल्कि भारत की संस्कृतिक, धार्मिक और शैक्षणिक धरोहर का प्रतीक है। यह नालंदा जिले का प्रमुख पर्यटन स्थल है। नालंदा नगर पंचायत 25°12' उत्तरी अक्षांश से 85°45' पूरब देशांतर के मध्य अवस्थित है। यह पर्यटन स्थल देशी, विदेशी पर्यटकों की भारी संख्या को आकर्षित करता है। यह क्षेत्र ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, प्राकृतिक, धार्मिक दृष्टिकोण से पर्यटन का सबसे समृद्ध क्षेत्र है। शोध क्षेत्र में यूनेस्को का ऐतिहासिक धरोहर नालंदा पुरातात्विक स्थल है साथ ही यहाँ पर अन्य पर्यटन केन्द्र भी हैं जो पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। जिसमें नालंदा संग्रहालय, ब्लैक बुद्धा मंदिर, ह्वेनसान स्मृति हॉल, पुष्पकर्णी तालाब (पंसोखर), बड़गाँव सूर्य मंदिर, बड़गाँव सूर्य तालाब, कुंडलपुर जैन मंदिर, नव नालंदा महाविहार, रुकमिन स्थान प्रमुख पर्यटन स्थल है। नालंदा नगर पंचायत बिहार का दूसरा सबसे लोकप्रिय पर्यटन स्थल है। 07 फरवरी 2024 को नवभारत टाइम्स में पर्यटन विभाग के आँकड़ों के आधार पर छपे लेख के अनुसार नालंदा में वर्ष 2023 में जनवरी से दिसंबर तक आए कुल देशी पर्यटकों की संख्या 14.16 लाख तथा विदेशी पर्यटकों की संख्या 62,855 थी।

4. पर्यटन तथा आजीविका विविधीकरण

(A) कृषि

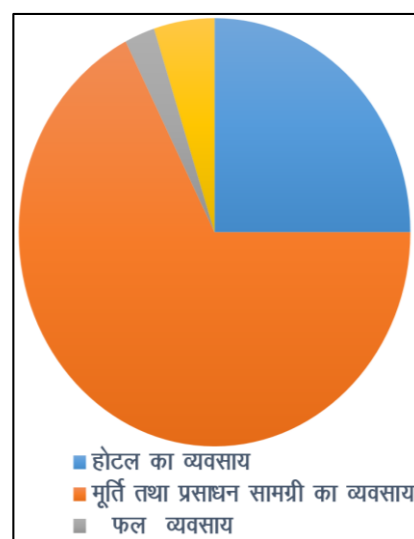
अध्ययन क्षेत्र नालंदा नगर पंचायत नालंदा जिला के गंगा तथा सहायक नदियों द्वारा बनाए गए मैदान का हिस्सा है। मैदानी भाग होने के कारण यहाँ मुख्य आर्थिक क्रियाकलाप कृषि है जिसमें यहाँ की ज्यादातर जनसंख्या संलग्न है। यह मनुष्य का प्राथमिक व्यवसाय है जो मानव सभ्यता के प्रारंभ से चली आ रही है। यह व्यवसाय मानव के सभी आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करती है यही कारण है कि कृषि भारत के विशाल आबादी के लिए जीवनदायक है साथ ही अर्थव्यवस्था का मुख्य स्तंभ भी है। वर्षा ऋतु किसानों के लिए खुशी का पर्याय बनती है क्योंकि इस ऋतु में वर्षा पर आधारित खरीफ या भदई फसलों का उत्पादन बड़े पैमाने पर होता है। इन फसलों में चावल, मक्का, जूट इत्यादि फसलों की प्रधानता होती है। अक्टूबर में बिहार में मॉनसून की वापसी प्रारंभ होती है। इस समय में वर्षा कम होती है। इस अंतिम वर्षा काल में होने वाली वर्षा अगहनी और रबी फसलों के लिए लाभदायक होती है। इस अवधि में होने वाली वर्षा को बिहार में हथिया कहते हैं। हथिया की वर्षा रबी की सफलता है। जिस वर्ष यह वर्षा नहीं होती है उस वर्ष रबी की फसल अच्छी नहीं होती है। चूंकि बिहार की कृषि मुख्य रूप से वर्षा पर आधारित है अतः इसे मॉनसून का जुआ भी कहते हैं। अध्ययन क्षेत्र की स्थिति के कारण यहाँ शीत ऋतु में भूमध्य सागर से आने वाली शीताणु चक्रवात का भी प्रभाव पड़ता है क्योंकि यह उसके गुजरने वाले मार्ग में अवस्थित है। ये चक्रवात दिसंबर और जनवरी में हल्की वर्षा लाते हैं। वैसे वर्षा की मात्रा 25 mm से 125 mm तक रहती है फिर भी यह

रबी के फसल के लिए लाभप्रद है। कृषि के अलावा मत्स्य पालन, कुक्कुट पालन भी किया जाता है तथा ज्यादातर घरों में गाय भी पाला जाता है। स्थानीय लोग कृषि कार्य में तो लगे हैं लेकिन साथ आय की स्थिरता के लिए अन्य व्यवसाय भी किया जाता है।

(B) आजीविका विविधीकरण

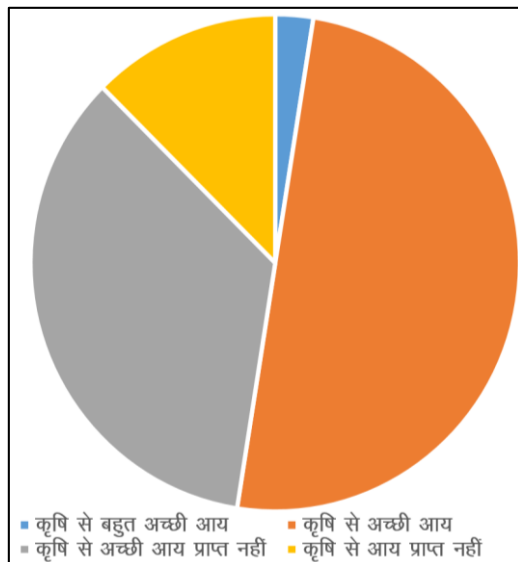
पर्यटन के अध्ययन क्षेत्र में आजीविका विविधीकरण के कई अवसर दिए हैं जिससे कृषि पर जीवनयापन का दबाव कम हुआ है। अध्ययन क्षेत्र में आजीविका विविधीकरण के ये अवसर होटल-रेस्टोरेंट व्यवसाय, पत्थर की मूर्ति तथा प्रसाधन सामग्री का व्यवसाय, फलों का व्यवसाय तथा अन्य सेवाओं के व्यवसाय के रूप में सामने आया है।

अध्ययन क्षेत्र में 100 दुकान मालिकों से प्रश्नावली के द्वारा जानकारी ली गई जिसके अनुसार यह पाया गया कि क्षेत्र में ज्यादातर पर्यटन केन्द्र के आसपास ही किए जाते हैं ताकि अधिक से लाभ मिल सके। आजीविका विविधीकरण से अपने जीवन यापन में लगे लोगों में 80% स्नातक, 22% मैट्रिक पास, 15% इंटर पास, 2.5% परास्नातक, 2.5% नन मैट्रिक तथा 27.5% लोग अशिक्षित हैं। इनके द्वारा मूलतः होटल-रेस्टोरेंट चालाए जाते हैं जो पर्यटन क्षेत्र में आजीविका विविधीकरण का एक महत्वपूर्ण साधन है शोध क्षेत्र के 25% स्थानीय लोगों के द्वारा आय अर्जन हेतु होटल का व्यवसाय किया जाता है। पत्थर की मूर्ति तथा प्रसाधन सामग्री का व्यवसाय 67.5% लोगों द्वारा किया जाता है और आय प्राप्त किया जाता है। 2.5% लोग फल बेचने का व्यवसाय करते हैं और 5% लोगों की खाद्य (असंगठित व्यवसाय जैसे झालमुड़ी तथा भेलपूरी) की दुकान है। यहाँ पर पर्यटन केन्द्र में नियुक्त दरवान तथा माली स्थानीय नहीं हैं। (वृत्त आरेख: 01)



आजीविका विविधीकरण: नालंदा नगर पंचायत

पर्यटन केन्द्र पर आजीविका के विभिन्न साधनों से आय प्राप्त करने वाले लोगों में ज्यादातर लोगों को कृषि से अच्छी आय प्राप्त नहीं होती। क्षेत्र के 35% लोगों को कृषि से अच्छी आय प्राप्त नहीं होती अतः अन्य व्यवसाय में संलग्नता इन्हें जीवन यापन में मदद करती है। 50% लोगों को खेती से अच्छी से आय मिलती है लेकिन फिर भी स्थिर और अतिरिक्त आय हेतु उन्होंने पर्यटन विकास से प्राप्त आजीविका के अन्य साधन को व्यवसाय बनाया है। 12.5% लोगों को खेती से बिलकुल आय नहीं है अतः उनके जीवन यापन का मूल साधन पर्यटन से उत्पन्न व्यवसाय में संलग्नता ही है। वहीं 2.5% लोग खेती से बहुत अच्छी आय प्राप्त करते हैं फिर भी व्यवसाय भी करते हैं ताकि आर्थिक जोखिम में कमी आ सके।



कृषि से आय: नालंदा नगर पंचायत

शत प्रतिशत व्यवसायियों को सर्वाधिक लाभ अक्टूबर से नवंबर के महीने में मिलता है। 35.5% व्यवसायियों के कुल खर्च का 25% आय पर्यटन स्थान पर किए जा रहे आजीविका उपार्जन के साधन से प्राप्त होता है वहीं 50% आय प्राप्त करने वाले 22.5% व्यवसाई हैं, 35.5% व्यवसाई कुल खर्च का 75% भाग पर्यटन पर आधारित व्यवसाय से प्राप्त करते हैं और अपने कुल खर्च का 100% भाग आजीविका विविधीकरण के साधन से प्राप्त करने वाले 12.5% व्यवसाई हैं।

शोध क्षेत्र के पर्यटन विकास से स्थानीय व्यवसायियों के आय में वृद्धि से जीवन स्तर में शत प्रतिशत सुधार होगा ऐसा यहाँ के शत प्रतिशत व्यवसाई का मानना है। इसी प्रकार पर्यटन केन्द्र से आजीविका विविधीकरण के द्वारा आय प्राप्त करने वाले लोगों में 100% का यह मानना है कि कृषि के बाद वो इस व्यावसाय से संतुष्ट हैं। कार्यरत लोगों में 92.5% लोगों ने स्थिर आय हेतु इस व्यवसाय को चुना है तथा 7.5% लोगों में खाद्य सुरक्षा हेतु इस व्यवसाय को चुना है। शत प्रतिशत लोग मानते हैं कि इस व्यवसाय से उनके जीवन स्तर में सुधार हुआ है तथा कृषि के बाद इस व्यावसाय से वो संतुष्ट हैं। शोध क्षेत्र के 97.5% लोगों ने पर्यटन से उत्पन्न हुए रोजगार के इन साधनों को आजीविका विविधीकरण का अच्छा विकल्प माना है जबकि 2.5% लोग इसे अच्छा विकल्प नहीं मानते क्योंकि वे व्यवसाय स्थायी नहीं हैं।

नालंदा नगर पंचायत में पर्यटन का मुख्य आकर्षण नालंदा का प्राचीन विश्वविद्यालय तथा संबंधित अन्य स्थल हैं। वर्ष 2016 में यूनेस्को ने नालंदा पुरातात्विक स्थल (प्राचीन विश्वविद्यालय के अवशेष) जब विरासत और ऐतिहासिक धरोहर घोषित किया तब से पर्यटन के मुख्य केन्द्र के साथ-साथ अन्य केन्द्र भी बहुत तेजी से विकसित हुए हैं तथा रोजगार के विविध साधनों का भी सृजन हुआ है जो आजीविका विविधीकरण को निरंतर प्रेरित कर रहा है। शोध क्षेत्र से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार यहाँ पर्यटन के द्वारा सृजित रोजगार के साधन से आय प्राप्त करने वाले 82.5% लोगों के पास कृषि हेतु भूमि उपलब्ध नहीं है। कृषिभूमि विहीन ये व्यवसाई पूर्व में दूसरे के खेतों में काम करके अपना जीवन यापन करते थे लेकिन वर्तमान समय में पिछले 07 वर्षों से पर्यटन द्वारा सृजित व्यवसाय में लगे हैं। ये अपने व्यवसाय से अक्टूबर से फरवरी तक 05 महीने में ही पूरे साल का खर्च निकाल लेते हैं, क्योंकि 05 महीने व्यवसाय हेतु सर्वाधिक लाभदायक महीने हैं। पर्यटन से होने वाले आजीविका विविधीकरण ने कृषि पर निर्भरता को काफी हद तक कम कर दिया है। शोध क्षेत्र में पिछले 35 साल से पत्थर की मूर्ति तथा पत्थर की प्रसाधन सामग्री का

व्यवसाय करने वाले व्यवसाई पिंटू का कहना है कि 2016 में यूनेस्को ने विश्वधरोहर के रूप में नालंदा को एक वैश्विक पहचान दी है तब से अब तक पर्यटकों की संख्या में लगातार वृद्धि हुई है तथा यहाँ पर लगने वाले दुकानों में भी दोगुनी वृद्धि हुई है हालांकि कोरोना काल ने इसमें बाधा उत्पन्न की थी। इसके साथ ही व्यवसाई का यह भी कहना है कि पर्यटकों की बढ़ती संख्या को उनके गंतव्य स्थानों तक पहुँचाने के लिए टमटम (घोड़ागाड़ी) तथा टोटो की संख्या में वृद्धि हुई है जो लोगों को वाहन सेवा देने हेतु प्रेरित करते हैं। इससे भी आजीविका विविधीकरण के साधन कार चालक या टमटम चालक के रूप में सामने आया है। शोध क्षेत्र से प्राप्त प्राथमिक आँकड़ों के अध्ययन से हम पाते हैं कि यहाँ 15% व्यवसाई के पास कृषि भूमि नगण्य है तथा ऐसे व्यावसायों का यह कहना है कि पर्यटन पर आधारित इनके द्वारा संचालित व्यवसाय ही इनके आजीविका उपार्जन का मुख्य और एक मात्र साधन है। सिर्फ 2.5% व्यवसाई के पास खेतिहर भूमि है लेकिन फिर भी वो पर्यटन केन्द्र के पास व्यवसाय करते हैं ताकि उन्हें स्थिर आय की प्राप्ति हो सके।

5. निष्कर्ष

शोध क्षेत्र नालंदा नगर पंचायत के अध्ययन के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि पर्यटन का विकास आजीविका विविधीकरण को प्रेरित करता है तथा रोजगार के कई अवसर देता है जिससे लोगों को स्थिर आय प्राप्त हो सके। आय की स्थिरता प्रतिकूल स्थिति में जीवनयापन को यथावत बल प्रदान करती है। अध्ययन क्षेत्र में आजीविका विविधीकरण के इन साधनों को स्थाई करने पर स्थानीय व्यवसायों ने बल दिया ताकि उनके आय का यह साधन स्थिर हो सके तथा जीवनयापन में जोखिमों को कम किया जा सके।

6. संदर्भ

1. प्रभात खबर (2023, Jan. 25) Retrieved from prabhatkhabar.com/State/bihar
2. नवभारत टाइम्स (2024, Feb. 7) Retrieved from navbharattimes.indiatimes.com
3. अताउल्लाह (2022). बिहार का आधुनिक भूगोल, पृष्ठ— 18, 19, 69—90. पटना: ब्रिलिएंट पब्लिकेशन।
4. हिन्दुस्तान (2023, अगस्त 04), पटना संस्करण।
5. जागरण (2022, जून 3), पटना संस्करण।
6. लाल सुधीर (2017) बिहार सामान्य ज्ञान, पृष्ठ— 42. पटना: क्राउन पब्लिकेशन।
7. Mishra A. Impact of Tourism on Local Communities: A Case of Nalanda, Bihar. Retrieved from ResearchGate; 2021.
8. Live Hindustan. (2025, May 5). नालंदा: ईको टूरिज्म से जुड़ेगा रोजगार, नालंदा के विकास को मिलेगा नया आयाम. Janta Serishta. Retrieved from Janta Serishta website.
9. Hindustan. (2025, February 9). Master Plan for Giddi Sarovar Development Under Eco Tourism in Nalanda [Hindi]. Live Hindustan. Retrieved from Live Hindustan.
10. ThePrint Hindi. (2024, July 23). बिहार में सड़क परियोजनाओं के लिए 26,000 करोड़ रुपये, नालंदा को पर्यटन केंद्र बनाने का प्रस्ताव. ThePrint Hindi. Retrieved from ThePrint Hindi.
11. Mondal MR. Tourism as a livelihood development strategy: A study of Tarapith Temple Town, West Bengal. Asia-Pacific Journal of Regional Science. 2020. <https://doi.org/10.1007/s41685-020-00164-6>